3

ब्रह्मानन्दवल्ली

ब्रह्मानन्दवल्ली तैत्तिरीयोपनिषद का दूसरा अध्याय है जिसमें अर्थ प्राचीन उपनिष्दों की तरह आत्मन् (आत्मा) का वर्णन किया गया है। इसमें विशेष रूप से यह कहा गया है कि आत्मा का अस्तित्व है, यह ब्रह्मा है और यह सवोच्च सशक्त और बंधन से मुक्ति के ज्ञान के रूप में हैं। ब्रह्मानंदवल्ली में जोर देकर कहा गया है कि स्वयं को जानना (आत्मज्ञान) ही सभी तरह के बंधनों, भय से मुक्ति तथा आनंदित जीवन के लिए एकमात्र मार्ग है।

उद्देश्य

यह पाठ पढ़ने के बाद आप सक्षम होंगे:

- तैत्तिरोपोपनिषद की ब्रह्मानन्दवल्ली का उच्चारण कर पाने में; और
- ब्रह्मानन्दवल्ली का अर्थज्ञान करने में ।

3.1 ब्रह्मानन्दवल्ली

ॐ सह नाववतु । सह नौ भुनक्तु । सह वीर्यं करवावहै । तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विषावहै । ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

aum saha navavatu . saha nau bhunaktu . saha viryam karavavahai . tejasvi navadhitamastu ma vidvishavahai . aum shantih shantih shantih ..

हम दोनों की एक साथ रक्षा करे। एक साथ हम दोनों को अपने अधीन कर ले। हम एक साथ शक्ति एवं वीर्य अर्जित करें। हम दोनों अध्ययन हम दोनों के लिए तेजस्वी हो, प्रकाश एवं शक्ति से परिपूरित हो। हम कदापि विद्वेष न करें।

शान्ति की स्थापना हो।

टिप्पणी

ॐ ब्रह्मविदाप्नोति परम्। तदेषाऽभ्युक्ता । सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म । यो वेद निहितं गुहायां परमे व्योमन् । सोऽश्नुते सर्वान् कामान्सह । ब्रह्मणा विपश्चितेति ॥ तस्माद्वा एतस्मादात्मन आकाशः सम्भूतः । आकाशाद्वायुः । वायोरग्निः । अग्नेरापः । अद्भ्यः पृथिवी । पृथिव्या ओषधयः । ओषधीभ्योन्नम् । अन्नात्पुरुषः । स वा एष पुरुषोऽन्नरसमयः। तस्येदमेव शिरः । अयं दक्षिणः पक्षः । अयमुत्तरः पक्षः । अयमात्मा । इदं पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति प्रथमोऽनुवाकः ॥

aum brahmavidapnoti param.h . tadesha.abhyukta . satyam j~nanamanantam brahma . yo veda nihitam guhayam parame vyoman.h . so.ashnute sarvan.h kaman saha . brahmana vipashchiteti .. tasmadva etasmadatmana akashah sambhutah . akashadvayuh . vayoragnih . agnerapah . ad.hbhyah prithivi . prithivya oshadhayah . oshadhibhyo.annam.h . annatpurushah . sa va esha purusho.annnarasamayah . tasyedameva shirah . ayam daxinah paxah . ayamuttarah paxah . ayamatma . idam puchcham pratishtha . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

ऊँ। ब्रह्मवेत्ता "परम तत्त्व" को प्राप्त करता है; क्योंकि प्राचीन ऋचाओं में यही कथन है, "ब्रह्म" "सत्य" है, "ब्रह्म" "ज्ञान" है "ब्रह्म" "अनन्त" है।

जो वेद की गुहा में निहित "उसका" खोज लेता है "उसके" ही प्राणियों को परम व्योम में "उसे" पा लेता है, वही समस्त कामनाओं को परितृप्त करता है तथा वही उस विज्ञानमय तथा बोधपूर्ण "अन्तरात्मा" के साथ "ब्रह्म" में निवास करता है।

यही हैं "आत्मतत्त्व"। इसी "आत्मतत्त्व" से आकाश उत्पन्न हुआ है तथा आकाश से वायु, वायु से अग्नि, तथा अग्नि से जलों की उत्पत्ति हुई है। जलों से पृथ्वी की, पृथ्वी से औषधियों की, एवं औषधियों से अन्न और अन्न से मनुष्य की उत्पत्ति हुई। वास्तव में यह मनुष्य, यह मानव सत्ता अन्न के रस से, उसके ही तत्त्व से ही निर्मित है। और यह जिसे हम देख रहे हैं, उसका शिर है, और यह उसका दक्षिण पक्ष है तथा यह उसका वाम पक्ष है; तथा यह उसकी अन्तरात्मा है एवं यह उसका निम्नांग है जिस पर वह स्थिर रूप से प्रतिष्ठित रहता है। जिसके विषय में "श्रुति" का यह वचन है।

अन्नाद्धै प्रजाः प्रजायन्ते । याः काश्च पृथिवीꣳश्रिताः । अथो अन्नेनैव जीवन्ति । अथैनदपि यन्त्यन्ततः । अन्नꣳहि भूतानां ज्येष्ठम् । तस्मात् सर्वौषधमुच्यते । सर्वं वै तेऽन्नमाप्नुवन्ति । येऽन्नं ब्रह्मोपासते । अन्नꣳहि भूतानां ज्येष्ठम् । तस्मात् सर्वौषधमुच्यते । अन्नाद् भूतानि जायन्ते ।

टिप्पणी

जातान्यन्नेन वर्धन्ते । अद्यतेऽत्ति च भूतानि । तस्मादन्नं तदुच्यत इति । तस्माद्वा एतस्मादन्नरसमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा प्राणमयः । तेनैष पूर्णः। स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधताम् । अन्वयं पुरुषविधः । तस्य प्राण एव शिरः । व्यानो दक्षिणः पक्षः । अपान उत्तरः पक्षः । आकाश आत्मा । पृथिवी पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति द्वितीयोऽनुवाकः ॥

annadvai prajah prajayante . yah kashcha prithivi{\m+} shritah . atho annenaiva jivanti . athainadapi yantyantatah. anna{\m+} hi bhutanam jyeshtham.h . tasmat.h sarvaushadhamuchyate . sarvam vai te.annamapnuvanti. ye.annam brahmopasate . anna{\m+} hi bhutanam jyeshtham.h . tasmat.h sarvaushadhamuchyate . annad.h bhutani jayante . jatanyannena vardhante . adyate.atti cha bhutani . tasmadannam taduchyata iti . tasmadva etasmadannarasamayat.h . anyo.antara atma pranamayah. tenaisha purnah . sa va esha purushavidha eva . tasya purushavidhatam.h . anvayam purushavidhah . tasya prana eva shirah . vyano daxinah paxah . apana uttarah paxah . akasha atma . prithivi puchcham pratishtha . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

सभी प्राणियों की सभी प्रजातियाँ अर्थात् संततियाँ अन्न से ही उत्पन्न होती हैं; इसीलिए वे अन्न से ही जीवित रहती हैं तथा अन्त में, पुनः अन्न में ही विलीन हो जाती हैं। क्योंकि सृष्ट पदार्थों में ज्येष्ठतम् अन्न है, इसीलिए उसे "सवोषधरूप" – समस्त विश्व का "हरित तत्त्व" कहा जाता है। वस्तुतः जो "ब्रह्म" की अन्न के रूप में उपासना करते हैं वे अन्न पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लेते हैं; क्योंकि अन्न ही समस्त सृष्ट पदार्थों में ज्येष्ठतम है और इसीलिए वह सवौषधम् "अर्थात्" "समस्त विश्व का औषधि रूप" कहा जाता है। सभी प्राणियों का जन्म अन्न से ही होता है तथा उत्पन्न होने पर वे अन्न से ही बढ़ते हैं। यह खाया जाता हैं। जो जीव इसपर पलते हैं उनको खाने के कारण यह अन्न कहलाता है।

इस अन्न–रसमय "आत्मा" से भिन्न एक अन्य "अन्तरात्मा" है जो "प्राणतत्त्व" से बना हुआ है। जिसे प्राणमय आत्मा कहते हैं। यह जो "प्राणमय" आत्मा है वह "अन्नमय" आत्मा को परिव्याप्त किये रहता है। यह प्राणमय आत्मा मनुष्य के समान ही आकार धारण करता है। जिस प्रकार वह देहाकार होता है, वैसे ही यह भी देहाकार होता है। प्राण–वायु ही इसका शिर है, व्यान–वायु उसका दक्षिण पक्ष है, अपान–वायु उसका वाम पक्ष है; आकाश उसका अन्तरात्मा है जो कि उसका आत्मा है, पृथ्वी उसका निम्नांग है जिस पर वह स्थिर रूप से प्रतिष्ठित रहता है। उसके विषय में "श्रुति" का यह कथन है।

टिप्पणी

प्राणं देवा अनु प्राणन्ति । मनुष्याः पशवश्च ये । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात् सर्वायुषमुच्यते । सर्वमेव त आयुर्यन्ति । ये प्राणं ब्रह्मोपासते । प्राणो हि भूतानामायुः । तस्मात् सर्वायुषमुच्यत इति । तस्यैष एव शारीर आत्मा । यः पूर्वस्य । तस्माद्वा एतस्मात् प्राणमयात् । अन्योऽन्तर आत्मा मनोमयः । तेनैष पूर्णः । स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधताम्। अन्वयं पुरुषविधः । तस्य यजुरेव शिरः । ऋग्दक्षिणः पक्षः । सामोत्तरः पक्षः । आदेश आत्मा । अथर्वाङ्गिरसः पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति तृतीयोऽनुवाकः ॥

pranam deva anu prananti . manushyah pashavashcha ye . prano hi bhutanamayuh . tasmat.h sarvayushamuchyate . sarvameva ta ayuryanti . ye pranam brahmopasate . prano hi bhutanamayuh . tasmat.h sarvayushamuchyata iti . tasyaisha eva sharira atma . yah purvasya . tasmadva etasmat.h pranamayat.h . anyo.antara atma manomayah . tenaisha purnah . sa va esha purushavidha eva . tasya purushavidhatam.h . anvayam purushavidhah . tasya yajureva shirah . rigdaxinah paxah . samottarah paxah . adesha atma . atharva~ngirasah puchcham pratishtha . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

"प्राण" रूप में ही देवगण निवास करते एवं निश्वास लेते हैं, और इसी प्रकार मानव तथा पशु भी; क्योंकि "प्राण" ही समस्त भूत–पदार्थों (सृष्ट पदार्थों) का जीवन है। इसीलिए उसे "सर्वायुष" अर्थात् "सबका जीवन–तत्त्व" कहा जाता है। वस्तुतः जो "ब्रह्म" की "प्राण" के रूप में उपासना करते हैं, वे "जीवन" पर पूर्ण प्रभुत्व प्राप्त कर लेते हैं, क्योंकि "प्राण" ही समस्त भूत–पदार्थों का जीवन है, इसीलिए उसे "सर्वायुष" अर्थात् "सबका जीवनतत्त्व" कहा जाता है। और यह प्राणमय "आत्मरूप" पूर्वरूप शरीर जो अन्नमय था, उसके अन्दर आत्मा है।

इस प्राणमय आत्मा से भिन्न, एक अन्य अन्तरात्मा है जो मनस्तत्त्व से निर्मित मनोमय आत्मा है। इस मनोमय आत्मा से यह प्राणमय आत्मा परिव्याप्त रहता है। और यह "मनोमय आत्मा" देहाकार में ही रचित है; जिस प्रकार अन्य का भी शरीर रूप है उसी प्रकार इसका भी देह रूप है। यजुर्वेद जिसका शिर है, ऋग्वेद उसका दक्षिण पक्ष है तथा सामवेद उसका वाम पक्ष है: परम आदेश उसकी आत्मा है जो कि उसका आत्मस्वरूप है। अथर्व अंगिरस उसका निम्न अंग है जिस पर वह स्थिररूप से प्रतिष्ठित है। उसके विषय में श्रुति का यह कथन है।

टिप्पणी

यतो॒ वाचो॒ निव॑र्तन्ते । अप्रा॑प्य॒ मन॑सा स॒ह । आनन्दं ब्रह्म॑णो वि॒द्वान् । न बिभेति कदा॑चने॒ति । तस्यैष एव शारी॑र आ॒त्मा । यः॑ पूर्व॒स्य । तस्माद्वा एतस्मा॑न्मनो॒मयात् । अन्योऽन्तर आत्मा वि॑ज्ञानु॒मयः । तेनै॑ष पू॒र्णः । स वा एष पुरुषवि॑ध एव । तस्य पुरु॑षवि॒धताम् । अ॒न्वयं॑ पुरुष॒विधः । तस्य श्र॑द्धैव॒ शिरः । ऋतं दक्षि॑णः प॒क्षः । सत्यमुत्त॑रः प॒क्षः । यो॑ग आ॒त्मा । महः॑ पुच्छं॑ प्रति॒ष्ठा । तदप्येष श्लो॑को भ॒वति ॥ १॥

इति चतुर्थोऽनुवाकः ॥

yato vacho nivartante . aprapya manasa saha . anandam brahmano vidvan.h . na bibheti kadachaneti . tasyaisha eva sharira atma . yah purvasya . tasmadva etasmanmanomayat.h . anyo.antara atma vij~nanamayah. tenaisha purnah . sa va esha purushavidha eva . tasya purushavidhatam.h . anvayam purushavidhah . tasya shraddhaiva shirah . ritam daxinah paxah . satyamuttarah paxah . yoga atma . mahah puchcham pratishtha . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

"ब्रह्म" का वह आनन्द रूप जहाँ से वाक् कुछ भी प्राप्त किए बिना लौट आती है तथा मन भी विस्मय से चकित होकर लौट आता है, "ब्रह्म" के उस आनन्द को कौन जानता है? वह अब और फिर कदापि भयभीत नहीं होगा। इससे पहले वाले शरीर में, जो "प्राणमय" था, यह "मनोमय पुरुष" ही उसकी आत्मा है।

इस मनोमय आत्मा से भी एक अलग अन्तरात्मा है जो विज्ञान तत्त्व से निर्मित है। और यह विज्ञानात्मा मनोमय आत्मा को परिव्याप्त किये रहता है। यह "विज्ञानात्मा" मनुष्य रूप की ही रूपाकृति धारण करता है; जिस प्रकार अन्य की भी मानवाकृति होती है, उसी प्रकार यह भी मानवाकृति में होता है। श्रद्धा ही उसका शिर है, विधान उसका दक्षिण पक्ष है, "सत्य उसका वाम पक्ष है;" योग उसकी अन्तरात्मा है जो कि उसक आत्मस्वरूप है; महः उसका निम्नांग है जिस पर वह स्थिररूप से प्रतिष्ठित रहता है। उसके विषय में "श्रुति" का यह कथन है।

विज्ञानं यज्ञं तनुते । कर्माणि तनुतेऽपि च । विज्ञानं देवाः सर्वे । ब्रह्म ज्येष्ठमुपासते । विज्ञानं ब्रह्म चेद्वेद । तस्माच्चेन्न प्रमाद्यति । शरीरे पाप्मनो हित्वा । सर्वान्कामान् समश्नुत इति । तस्यैष एव शारीर आत्मा । यः पूर्वस्य । तस्माद्वा एतस्माद्विज्ञानमयात् । अन्योऽन्तर आत्माऽऽनन्दमयः । तेनैष पूर्णः । स वा एष पुरुषविध एव । तस्य पुरुषविधताम् । अन्वयं पुरुषविधः । तस्य प्रियमेव शिरः । मोदो दक्षिणः पक्षः । प्रमोद उत्तरः पक्षः । आनन्द आत्मा । ब्रह्म पुच्छं प्रतिष्ठा । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति पञ्चमोऽनुवाकः ॥

vij~nanam yaj~nam tanute . karmani tanute.api cha .
vij~nanam devah sarve . brahma jyeshthamupasate .

टिप्पणी

vij~nanam brahma chedveda . tasmachchenna pramadyati . sharire papmano hitva . sarvankamansamashnuta iti . tasyaisha eva sharira atma . yah purvasya . tasmadva etasmadvij~nanamayat . h . anyo . antara atma.a.anandamayah . tenaisha purnah . sa va esha purushavidha eva . tasya purushavidhatam.h . anvayam purushavidhah . tasya priyameva shirah . modo daxinah paxah . pramoda uttarah paxah . ananda atma . brahma puchcham pratishtha . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

विज्ञान यज्ञ के रस को विस्तार देता करता है तथा विज्ञान कर्म के रस को भी विस्तार देता है। सभी देवगण उस "ब्रह्म" के रूप में तथा विश्व के ज्येष्ठ के रूप में उपासना करते हैं। यदि कोई ब्रह्म की "विज्ञान" के रूप उपासना करे तथा उससे विमुख न हो, न ही उससे प्रमाद करे, तो वह इसी शरीर (जन्म) में पापों से मुक्त होकर समस्त इच्छाओं की पूर्ति करता है। तथा यह "विज्ञानमय" आत्मा इससे पूर्व वर्णित मनोमय शरीर में आत्मा–सदृश है। अब इस विज्ञानमय आत्मा से भी अन्य एक अन्तरात्मा है जो "आनन्द" से निर्मित है। तथा, आनन्दमय आत्मा विज्ञानमय आत्मा में परिव्याप्त रहता है। और यह "आनन्दात्मा" देहरूप में ही रचित होता है; जिस प्रकार अन्य भी देह हैं, उसी प्रकार यह भी देह है। प्रेम (प्रियं भाव) "इसका" शिर है मोद (हर्ष) "इसका" दक्षिण पक्ष है प्रमोद (सुख) "इसका" वाम पक्ष है; "आनन्द" "इसका" अन्तरात्मा है जो कि "उसका" आत्मस्वरूप है; शाश्वत तत्त्व–"ब्रह्म" "इसका" निम्नांग है जिसमें "वह" स्थिरभाव से प्रतिष्ठित रहता है। इसके विषय में "श्रुति" का यह कथन है।

असंन्नेव स भवति । असद्ब्रह्मेति वेद चेत् । अस्ति ब्रह्मेति चेद्वेद । सन्तमेनं ततो विदुरिति । तस्यैष एव शारीर आत्मा । यः पूर्वस्य । अथातोऽनुप्रश्नाः । उताविद्वानमुं लोकं प्रेत्य । कश्चन गच्छतीइ३ उ । आहो विद्वानमुं लोकं प्रेत्य । कश्चित्समश्नुताइ३ उ । सोऽकामयत । बहुस्यां प्रजायेयेति । स तपोऽतप्यत । स तपस्तप्त्वा । इदꣳसर्वमसृजत । यदिदं किञ्च । तत्सृष्ट्वा । तदेवानुप्राविशत् । तदनु प्रविश्य । सच्च त्यच्चाभवत् । निरुक्तं चानिरुक्तं च । निलयनं चानिलयनं च । विज्ञानं चाविज्ञानं च । सत्यं चानृतं च सत्यमभवत् । यदिदं किञ्च । तत्सत्यमित्याचक्षते । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति षष्ठोऽनुवाकः ॥

asanneva sa bhavati . asad.hbrahmeti veda chet.h . asti brahmeti chedveda . santamenam tato viduriti . tasyaisha eva sharira atma . yah purvasya . athato.anuprashnah . utavidvanamum lokam pretya . kashchana gachchati3 u .##3 this is a mark for prolonging the vowel in the form ## .a.a.a##]## . aho vidvanamum lokam pretya kashchitsamashnuta 3 u . so.akamayata . bahu syam prajayeyeti . sa tapo.atapyata . sa tapastaptva . ida{\m+} sarvamasrijata . yadidam ki~ncha . tatsrishtva . tadevanupravishat.h . tadanupravishya . sachcha tyachchabhavat.h . niruktam chaniruktam cha . nilayanam

टिप्पणी

chanilayanam cha . vij~nanam chavij~nanam cha . satyam chanritam cha satyamabhavat.h . yadidam ki~ncha . tatsatyamityachaxate . tadapyesha shloko bhavati .. 1..

यदि कोई "ब्रह्म" के रूप को "असत्" रूप मझता है तो वह स्वयं भी असत् समान बन जाता है; किन्तु यदि वह "ब्रह्म" को इस रूप में जानता है कि वह है, तो लोग उसे ऋषि की तरह मानते हैं तथा वह उनके लिए एक यथार्थ सत्य है। और यह "आनन्दात्मा" "विज्ञानमय आत्मा" के लिए शरीर में आत्मा–सदृश है। और इसके विषय में ये प्रश्न उठते हैं–"जब कोई इस "ज्ञान" के बिना इस लोक से अन्य लोक में गमन करता है तो क्या ऐसा व्यक्ति उससे भी आगे की यात्रा करता है? अथवा ऐसा कोई व्यक्ति जो विद्वान् है, जब इस लोक से अन्य लोक में गमण करता है तो क्या वह प्रभुत्व का आनन्दभोग करता है?"

"परमात्म तत्त्व" ने आदिकाल में सोचा मैं अपनी प्रजा के जन्म के हेतु अनेकरूप में हो जाऊँ। अतः उसने स्वयं को पूर्णतया चिन्तन में एकाग्र किया, और अपने चिन्तन की शक्ति से, अपने तप से उसने इस सृष्टि की रचना की। और फिर जब उसने यह सृष्टि रचना कर डाली तो जो उसने रचा उसी में वह प्रवेश कर गया, तथा प्रविष्ट होकर यहाँ सत् रूप बन गया वहाँ "सम्भाव्य" (त्यच्) बन गया; वह निरुक्त (निर्वचनीय) तथा "अनिरुक्त" (अनिर्वचनीय) बन गया; वह आवासभूत तत्त्व तथा आवासरहित तत्त्व बन गया। वही "ज्ञान" बन गया तथा वही "अज्ञान" बन गया; वही "सत्य" बन गया तथा वही असत्य बन गया। सम्पूर्ण सत्य "वही" बन गया, जो कुछ भी यहाँ विद्यमान है वह सब

कुछ "वही" बन गया। इसीलिए "उसके" विषय में कहा जाता है कि "वह" "सत्य–स्वरूप" है। उसके सम्बन्ध में श्रुति का यह कथन है।

असद्वा इदमग्र आसीत् । ततो वै सदजायत । तदात्मान स्वयमकुरुत । तस्मात्तत्सुकृतमुच्यत इति । यद्वै तत् सुकृतम् । रसो वै सः । रसꣳह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दी भवति । को ह्येवान्यात्कः प्राण्यात् । यदेष आकाश आनन्दो न स्यात् । एष ह्येवाऽऽनन्दयाति । यदा ह्येवैष एतस्मिन्नदृश्येऽनात्म्येऽनिरुक्तेऽनिलयनेऽभयं प्रतिष्ठां विन्दते । अथ सोऽभयं गतो भवति । यदा ह्येवैष एतस्मिन्नुदरमन्तरं कुरुते । अथ तस्य भयं भवति । तत्वेव भयं विदुषोऽमन्वानस्य । तदप्येष श्लोको भवति ॥ १॥

इति सप्तमोऽनुवाकः ॥

asadva idamagra asit.h . tato vai sadajayata . tadatmana{\m+} svayamakuruta . tasmattatsukritamuchyata iti . yadvai tat.h sukritam.h . raso vai sah . rasa{\m+} hyevayam labdhva.a.anandi bhavati . ko hyevanyatkah pranyat.h . yadesha akasha anando na syat.h . esha hyeva.a.anandayati . yada hyevaisha etasminnadrishye.anatmye.anirukte.anilayane.abhayam medskip pratishtham vindate . atha so.abhayam gato bhavati . yada hyevaisha etasminnudaramantaram kurute. atha tasya bhayam bhavati . tatveva bhayam vidusho.amanvanasya . tadapyesha shloko bhavati .. 1.

प्रारंभ में यह सम्पूर्ण विश्व "असत्" एवं "अव्यक्त" था, इसी परम् ब्रह्म में से इस "व्यक्त सत्ता" का प्रादुर्भाव हुआ। उसने अपना सृजन "स्वयं" ही किया; अन्य किसी ने उसकी सृजना नही की है। इसी कारण इसके सम्बन्ध में कहा जाता है यह "सुकृत" अर्थात् बहुत सुचारु एवं रूप से रचा गया है। और यह जो बहुत अच्छी तरह तथा सुन्दरता से रचा गया है यह वस्तुतः अन्य कुछ नहीं, इस अस्तित्व के पीछे छिपा हुआ आनन्द, रस ही है। जब प्राणी इस आनन्द को, इस रस को प्राप्त कर लेता है तो वह स्वयं आनन्दमय बन जाता है। कारण, यदि उसकी सत्ता के हृदयाकाश में यह आनन्द न हो तो कौन है जो प्राणों को अन्दर ले पाने का श्रम कर पायेगा अथवा किसके पास प्राणों को बाहर छोड़ने की शक्ति होगी? "यहीं" है जो आनन्द का स्रोत है; क्योंकि जब हमारी "अन्तरात्मा" उस "अदृश्य", "अशरीरी" (अनात्म्य) अनिर्दशं (अनिरुक्त) एवं "अनिलयन" "ब्रह्म" में आश्रय ग्रहण करके दृढ़ रूप से "उस" प्रतिष्ठित हो जाता है, तब वह "भय" की परिधि से बाहर हो जाता है। किन्तु जब हमारी "अन्तरात्मा" स्वयं के लिए "ब्रह्म" में स्वल्पमात्र भी भेद करती है, तो वह भययुक्त हो जाती है; जो विद्वान् मननशील नहीं है, उसके लिए स्वयं "ब्रह्म" ही एक भय बन जाता है। उसके विषय में "श्रुति" का यह कथन है।

भीषाऽस्माद्वातः पवते । भीषोदेति सूर्यः । भीषाऽस्मादग्निश्चेन्द्रश्च । मृत्युर्धावति पञ्चम इति । सैषाऽऽनन्दस्य मीमांसा भवति । युवा स्यात्साधुयुवाऽध्यायकः । आशिष्ठो दृढिष्ठो बलिष्ठः । तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात् । स एको मानुष आनन्दः । ते ये शतं मानुषा आनन्दाः ॥ १॥

स एको मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं मनुष्यगन्धर्वाणामानन्दाः । स एको देवगन्धर्वाणामानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं देवगन्धर्वाणामानन्दाः । स एकः पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं पितृणां चिरलोकलोकानामानन्दाः । स एक आजानजानां देवानामानन्दः ॥ २॥

श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं आजानजानां देवानामानन्दाः । स एकः कर्मदेवानां देवानामानन्दः। ये कर्मणा देवानपियन्ति । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं कर्मदेवानां देवानामानन्दाः । स एको देवानामानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं देवानामानन्दाः । स एक इन्द्रस्याऽऽनन्दः ॥ ३॥

श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतमिन्द्रस्याऽऽनन्दाः । स एको बृहस्पतेरानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं बृहस्पतेरानन्दाः। स एकः प्रजापतेरानन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य । ते ये शतं प्रजापतेरानन्दाः । स एको ब्रह्मण आनन्दः । श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य ॥ ४॥

स यश्चायं पुरुषे । यश्चासावादित्ये । स एकः । स य एवंवित् । अस्माल्लोकात्प्रेत्य । एतमन्नमयमात्मानमुपसङ्क्रामति । एतं प्राणमयमात्मानमुपसङ्क्रामति । एतं मनोमयमात्मानमुपसङ्क्रामति । एतं विज्ञानमयमात्मानमुपसङ्क्रामति । एतमानन्दमयमात्मानमुपसङ्क्रामति । तदप्येष श्लोकौ भवति ॥ ५॥

इत्यष्टमोऽनुवाकः ॥

Bhisha.asmadvatah pavate . bhishodeti suryah . bhisha.asmadagnishchendrashcha . mrityurdhavati pa~nchama iti . saisha.a.anandasya mima{\m+}sa bhavati. yuva syatsadhuyuva . adhyayakah . ashishtho dridhishtho balishthah . tasyeyam prithivi sarva vittasya purna syat.h . sa eko manusha anandah . te ye shatam manusha anandah .. 1..

sa eko manushyagandharvanamanandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam manushyagandharvanamanandah . medskip sa eko devagandharvanamanandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam devagandharvanamanandah . sa ekah pitrinam chiralokalokanamanandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam pitrinam chiralokalokanamanandah . sa eka ajanajanam devanamanandah .. 2..

shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam ajanajanam devanamanandah . sa ekah karmadevanam devanamanandah . ye karmana devanapiyanti . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam karmadevanam devanamanandah . sa eko devanamanandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam devanamanandah . sa eka indrasya.a.anandah .. 3.. shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatamindrasya.a.anandah . sa eko brihaspateranandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam brihaspateranandah . sa ekah prajapateranandah . shrotriyasya chakamahatasya . te ye shatam prajapateranandah . sa eko brahmana anandah . shrotriyasya chakamahatasya .. 4..

sa yashchayam purushe . yashchasavaditye . sa ekah . sa ya

eva.nvit.h . asmallokatpretya . etamannamayamatmanamupasa~nkramati . etam pranamayamatmanamupasa~nkramati . etam manomayamatmanamupasa~ nkramati . etam vij~nanamayamatmanamupasa~nkramati . etamanandamayamatmanamupasa~nkramati . tadapyesha shloko bhavati .. 5..

उस पर ब्रह्म के भय से ही वायु बहती है; उसके भय से ही सूर्य उदित होता है। "उसके" भय से इन्द्र, अग्नि तथा मृत्यु अपने कार्यों में प्रवृत्त होते हैं। देखो यह आनन्द की मीमांसा है जिसे तुम सुनोगे। कोई नवयुवक हो, जो अपने यौवन के उत्तम रूप तथा माधुर्य से भरा हुआ हो, जो श्रेष्ठ अध्येता हो, उसका शिष्ट आचरण हो, दृढभावों वाला हृदय हो तथा बलिष्ठ शरीर हो तथा यह सम्पूर्ण विस्तृत वसुन्धरा उसके आनन्द भोग के लिए धन–धान्यपूर्णा हो। यह है एक मनुष्य के आनन्द का परिमाण। अब ऐसे सौ–सौ मानुष–आनन्द उन मनुष्यों के लिए एक आनन्द है जो स्वर्ग में गन्धर्व बन चुके हैं। यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का, जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। ऐसे सौ–सौ मनुष्यगन्धर्व आनन्द के परिमाण से बना है, स्वर्ग में रहने वाले गन्धर्वरूपी देवों का एक आनन्द (देवगन्धर्व आनन्द)। और, यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का, जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। और ऐसे सौ–सौ देवगन्धर्व आनन्दों को मिलाने से बनता है उन "पितरों" का एक आनन्द जिनका स्वर्ग लोक ही चिरलोक है। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का, जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। और चिरलोकवासी पितरों के इस परिमाण वाले आनन्द के सौ–सौ आनन्दों के बराबर है उन देवों का

एक आनन्द जो स्वर्ग में देवरूप में जन्म लेते हैं। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का, जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। स्वर्गलोक में हीं आरम्भ से जन्में देवों के आनन्द का सौ–सौ गुने के बराबर है उन कर्मदेवों का एक आनन्द, जो अपने सत्कर्मों के बल से प्रयाण करके स्वर्ग में "देव" बन गये हैं। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। कर्मदेवों के ऐसे सौ–सौ आनन्दों के बराबर है उन देवों का एक आनन्द जो महान् देव हैं तथा जो नित्य–चिरन्तन देव हैं। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। और देवों के इस दिव्य आनन्द के सो–सौ गुने के बराबर है स्वर्गपति इन्द्र का एक आनन्द। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। इन्द्र के इस आनन्द जैसे सौ–सौ आनन्दों के बराबर है स्वर्ग में देवों के गुरु बृहस्पति का एक आनन्द। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। बृहस्पति के सौ–सौ आनन्दों के बराबर है "शक्तिशाली परमपिता" प्रजापति का एक आनन्द। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं। प्रजापति के सौ–सौ आनन्दों के बराबर है "ब्रह्म" (शाश्वत–परमात्म–तत्त्व) का एक आनन्द। और यह है आनन्द वेदविद् (श्रोत्रिय) का जिसकी आत्मा को काम का प्रहार छूता तक नहीं।

"परमात्मतत्त्व" जो यही एक मनुष्य में है तथा "परमात्मतत्त्व" जो वहाँ सूर्य में है, यह एक ही है, इससे अन्य कोई नहीं है। जो यह जानता है, वह इस लोक से जब गमन करता है तब इस "अन्नमय आत्मा" में

संक्रमण करता है, वह "प्राणमय आत्मा" में संक्रमण करता है; वह "मनोमय आत्मा" में संक्रमण करता है; वह "विज्ञानमय आत्मा" में संक्रमण करता है। वह आनन्दमय आत्मा में संक्रमण करता है। इसके विषय में भी यह श्रुति–कथन है।

यतो॒ वाचो॒ निव॑र्तन्ते । अप्रा॑प्य॒ मन॑सा स॒ह । आनन्दं ब्रह्म॑णो वि॒द्वान् । न बिभेति कुत॑श्चने॒ति । एत॑ꣳह वाव॑ न त॒पति । किमह॑ꣳसाधु॑ नाकु॒रवम् । किमहं॑ पापमकर॑वमि॒ति । स य एवं॑ विद्वानेते आत्मा॑न स्पृ॒णुते । उ॒भे ह्ये॑वैष॒ एते आत्मा॑न स्पृ॒णुते । य एव॒ं वेद॑ । इत्यु॑प॒निष॑त् ॥ १॥

इति नवमोऽनुवाकः ॥

॥ इति ब्रह्मानन्दवल्ली समाप्ता ॥

yato vacho nivartante . aprapya manasa saha . anandam brahmano vidvan.h . na bibheti kutashchaneti . eta{\m+} ha vava na tapati . kimaha{\m+} sadhu nakaravam.h . kimaham papamakaravamiti . sa ya evam vidvanete atmana{\m+} sprinute . ubhe hyevaisha ete atmana{\m+}

"ब्रह्म" का वह आनन्द जहाँ से कुछ भी प्राप्त किए बिना वाक् वापिस लौट आती है तथा मन भी जहाँ पहुँच कर विस्मय से चकित होकर लौट आता है, "ब्रह्म" के उस आनन्द को कौन जानता है? वह चाहे इस जगत् में, चाहे अन्यत्र, कहीं भी, भयभीत नहीं होता। वास्तव में उसको कोई सन्ताप नहीं होता तथा ये पीड़ापूर्ण भाव उसके मन में

नहीं आते–"मैंने सत्कर्म को करना क्यों छोड़ दिया तथा मैंने उस पापकर्म का आचरण को क्यों किया? क्योंकि जो "नित्यब्रह्म" को जानता है वह इन्हें जानता है, वह यह जानता है कि ये उसके "आत्मतत्त्व" के समान ही हैं। वह जानता है कि ये शुभ एवं अशुभ दोनों क्या हैं? तथा "ब्रह्म" को ऐसा जानते हुए वह आत्मा को मुक्त करता है। और यही उपनिषद् है, यहीं है वेद का रहस्य है।

"वह" हम दोनों की एक साथ रक्षा करे; "वह" एक साथ हम दोनों को अपने अधीन कर ले, हम एक साथ शक्ति एवं वीर्य अर्जित करें। हम दोनों का अध्ययन हमारे लिए तेजस्वी हो, प्रकाश एवं शक्ति से परिपूरित हो। हम कदापि विद्वेष न करें।

शान्ति की स्थापना हो।

ॐ इति ब्रह्मानन्दवल्ली समाप्ता ॐ

क्रियाकलाप

- ब्रह्मानन्दवल्ली के मंत्रों का प्रतिदिन उच्चारण करें।

पाठगत प्रश्न– 3.1

रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

1. यो वेद निहितं .... परमे व्योमन् ।
2. अथो अन्नेनैव .... ।
3. अन्योऽन्तर .... प्राणमयः ।
4. .... हि भूतानामायुः ।
5. .... ब्रह्मणो विद्वान् ।
6. .... समश्नुत इति ।
7. सत्यं .... च सत्यमभवत् ।
8. यदेष .... आनन्दो न स्यात् ।
9. स एकः .... चिरलोकलोकानामानन्दः ।
10. स एकः .... देवानामानन्दः ।

आपने क्या सीखा?

- ऋचाओं (मंत्रों) का उच्चारण।
- ब्रह्मानन्दवल्ली का अर्थज्ञान।

पाठांत प्रश्न

1. ब्रह्मानन्दवल्ली का सार लिखिए।

उत्तरमाला

3.1

1. गुहांयां
2. जीवन्ति
3. आत्मा
4. प्राणो
5. आनन्दं
6. सर्वान्कामान्
7. चानृतं
8. आकाश
9. पितृणां
10. कर्मदेवानां